Muktibodh aur Samsheel
Telugu Rachnakar (Hindi-Telugu)

*edited by: Dr. **Perisetti Srinivasa Rao***

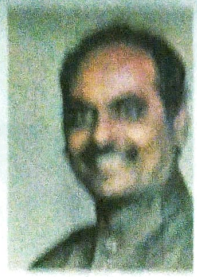

హిందీ తెలుగుభాషలలో మేటైన స్వీయరచనలతో ఆయా భాషల రెండింటినీ కలుపుతూ వారధిలాంటి అనువాద రచనలతో రెండు సాహిత్యాలలో బలమైన పునాదిని వేసిన బహుభాషావేత్త డా॥ పేరిశెట్టి శ్రీనివాసరావు. వక్తగా, రచయితగా, నిత్య అధ్యయన కృషీవలునిగానే కాక కార్యకర్తగా కూడా హిందీ తెలుగు సాహిత్యాలలో అనేక సారవంతమైన కార్యక్రమాలకు రూపకల్పన చేస్తూ, రెండు సాహిత్యాలనూ నిత్యం కలుపుతూ, కదులుతూ, కదిలిస్తూ సాహిత్యానికి మూల లక్షణమైన జీవప్రవాహితను కొనసాగిస్తున్న వారు, కాపాడుతున్నవారు, నిలబెడుతున్నవారు డా॥ పేరిశెట్టి శ్రీనివాసరావు. తెలుగు సాహిత్యాన్ని హిందీలోకి తీసుకువెళ్ళి బలాన్ని పెంచడం, హిందీసాహిత్యాన్ని తెలుగులోకి తీసుకువచ్చి ఇక్కడ బలాన్ని పెంచడం పేరిశెట్టి విశేషం. బల్దేవ్ సింగ్ బద్దన్ హిందీలో వ్రాసిన **'ఛటకారా'** (బాలసాహిత్యం) అనువాదం తెలుగులో **'విముక్తి'** అనే పేరుతో చేశారు. నవలలు, కథలు, నాటిక, కవితలు తెలుగునుండి హిందీలోనికి, హిందీనుండి తెలుగులోనికి అనువాదం చేసిన శ్రీనివాసరావు లబ్ధప్రతిష్ఠులు.

'యశోధర' (చారిత్రక నవల-తెలుగు)ను హిందీలోనికి అనువదించారు. ఈయన హిందీలో వ్రాసిన **'ఆలూరి బైరాగి కే కవితాఓంమే మానవతావాద్'** మరియు **'ఆచార్య హజారీ ప్రసాద్ ద్వివేదీ కే ఉపన్యాసోంమే సంస్కృతి'** ప్రాచుర్యం పొందినవి. ఆంధ్రప్రదేశ్ హిందీఅకాడెమీ వారిచే 2011లో **'తెలుగుభాషీ హిందీ యువాలేఖక్'** పురస్కారాన్ని పొందారు. **'డా. హరివంశ్ రాయ్ బచ్చన్ : ఏక్ అనుశీలన్'** (హిందీ), **'కవీంద్ర రవీంద్ర కా భారతీయ సాహిత్యపర్ ప్రభావ్'** (హిందీ) అను పుస్తకాలకు సంపాదకత్వం వహించారు. అంతేకాకుండా **తెలుగుభాషా వైతాళికులు** గురజాడ, గిడుగు... పుస్తకానికి కూడా సంపాదకత్వబాధ్యతలు నిర్వహించారు. **'మహాత్మా జ్యోతిరావు ఫూలే'** నాటకాన్ని హిందీలోకి అనువదించి, దానితోపాటు ఎంపిక చేసుకున్న కొన్ని హిందీ కవితల్ని **'నా భాష నీ మనసు'** శీర్షికన ప్రచురించబోతున్నారు. ప్రస్తుతం వీరు పి.జి. & రీసర్చ్ ఇన్స్టిట్యూట్, దక్షిణ భారత హిందీ ప్రచారసభ 'బెల్గాం'లో సహాయక ఆచార్యులుగా పనిచేస్తున్నారు.

जन्म : राजमहेन्द्रवरम (आंध्रप्रदेश) में

मातृ भाषा : तेलुगु

शिक्षा : प्रारंभिक शिक्षा तथा स्नातक राजमहेन्द्रवरम के [illegible] में

स्नातकोत्तर एवं पीएच.डी. (हिन्दी) आंध्र विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग से। [illegible]

अध्यापन : [illegible] शिक्षा और शोध संस्थान, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास, [illegible] केन्द्र में प्रवक्ता

संपादक : [illegible]

प्रकाशित रचनाएं : आलूरि बैरागी की कविताओं में मानवतावाद, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के उपन्यासों में संस्कृति, विमुक्ति (बाल साहित्य हिंदी छुटकारा का तेलुगु अनुवाद)

संपादन : डॉ हरिवंश राय बच्चन एक अनुशीलन, कवीन्द्र रवीन्द्र का भारतीय साहित्य पर प्रभाव, तेलुगु भाषा वैतालिकुलु गुरजाडा, गिडुगु ... (तेलुगु)

सम्मान : आंध्रप्रदेश हिन्दी अकादमी से तेलुगु भाषी युवा हिन्दी लेखक पुरस्कार से 2011 में सम्मानित किया गया

संपर्क : 31-4-23, #202 साईराम रेसीडेंसी
डी.पी. राव स्ट्रीट, मारुति नगर,
विजयवाड़ा - 520 004 (आंध्र प्रदेश)

ISBN

ISBN 978 93 80693 96 5

AKSHARA
SAAHITI - SANSKRITIK - SEVA PEETHAM
RAJAHMUNDRY - 533 103
e-mail: srperisetti@gmail.com Ph.: 9989242343

मुक्तिबोध और समशील तेलुगु रचनाकार

अक्षरा

मुक्तिबोध और समशील तेलुगु रचनाकार

ముక్తిబోధ్ ఔర్ సమశీల్ తెలుగు రచనాకార్

पेरिसेट्टि श्रीनिवासराव

अनुक्रम / అనుక్రమణిక

ముందుమాట v

संपादकीय vii

1. बहुत कुछ सीखना है मुक्तिबोध से - *हरि राम मीणा* 1
2. खतरे में अभिव्यक्ति - *रंजना अरगडे* 14
3. फासीवादी दस्तक का दस्तावेज : अंधेरे में - *रामप्रकाश* 24
4. मुक्तिबोध का आलोचनागत अवदान - *मृदुला शुक्ल* 34
5. मुक्तिबोध के संदर्भ में रामविलास शर्मा के पूर्वग्रह - *जे.आत्माराम* 42
6. मुक्तिबोध की आलोचना में संवेदनात्मक ज्ञान - *हरि रामप्रसाद पसुपुलेटी* 51
7. मुक्तिबोध का परम्परा बोध 'एक अन्तर्कथा' के आइने से - *प्यारा सिंह* 54
8. मुक्तिबोध के साहित्य में व्यक्ति - *सूर्यकांत त्रिपाठी* 58
9. मुक्तिबोध की कविता 'तुम लोगों से दूर':एक विश्लेषण - *सरोज सिंह* 65
10. प्रगतिशील काव्य धारा और मुक्तिबोध - *टी.सुमती* 68
11. मुक्तिबोध की कविताएँ : एक विश्लेषण - *पी.वी.डी.श्रीदेवी* 72
12. मुक्तिबोध के काव्य में व्यक्त यथार्थ - *बिभा कुमारी* 77
13. नूतन प्रतीकों का जीवन्त दस्तावेज: चाँद का मुँह टेढ़ा है - *रचना* 84
14. मुक्तिबोध के काव्यों में सामाजिक चित्रण - *पी.आर.वासुदेवन शेष* 91
15. मुक्तिबोध की रचनाओं में सामाजिक यथार्थ - *कोडगावे किशन* 97
16. मुक्तिबोध की कविताओं में यथार्थबोध - *सीहेच.वी.महालक्ष्मी* 100
17. मुक्तिबोध के काव्य में समाज बोध - *के. श्याम सुंदर* 105
18. मुक्तिबोध की कविता में व्यंग्य की प्रासंगिकता - *वर्षारानी सहदेव* 109
19. समाजवादी कवि 'मुक्तिबोध' - *करि.सुधा* 118
20. मुक्तिबोध की कविताओं में समाज *('अंधेरे में' कविता के संदर्भ में)* - *पोलानी सुरेश* 122
21. मुक्तिबोध की कविताओं में चेतना दृष्टि - *आदिनारायण बादावत* 126
22. मुक्तिबोध की कविता में जीवन दृष्टि - *के.रेणुका* 128
23. मुक्तिबोध की कविताओं में आत्मसंघर्ष - *पी.तिरुपतम्मा* 132
24. हिन्दी साहित्य में मुक्तिबोध का महत्व - *जे.सेन्दामरै* 136
25. मुक्तिबोध काव्य - जिन्दगी की कोख में जन्मा नया इस्पात - फैन्टेसी का रूप - *वेदुला रमा पद्मजा* 139
26. मुक्तिबोध के काव्य में फैंटेसी - *आर.श्रीनिवासराव पात्रो* 142
27. मुक्तिबोध की काव्यभाषा में यथार्थ - आक्रोश - *नयना डेलीवाला* 147
28. मुक्तिबोध: काव्य भाषा के शिल्पकार - *संजय प्रसाद श्रीवास्तव* 152
29. अद्भुत रचना-दृष्टि के गजानन माधव 'मुक्तिबोध':एक अध्ययन - *वी.सरोजिनी* 159
30. नवयुवक कवि मुक्तिबोध - *वी. कांचनमाला* 165
31. हिंदी साहित्य के आलोच्य रचनाकार गजानन माधव 'मुक्तिबोध' - *एम. सीता महालक्ष्मी* 169
32. कहानीकार मुक्तिबोध - *भानुबहन एम. चौधरी* 171
33. मुक्तिबोध की कहानियों में अभिशप्त बुद्धिजीवी वर्ग - *अनीता पटेल* 180
34. आलूरि बैरागी और गजाननमाधव मुक्तिबोध काव्य में चित्रित समाज - *एस.वी.एस.एस.नारायण राजु* 185
35. प्रगतिशील चेतना के वाहक मुक्तिबोध और शेषेन्द्र - *पेरिसेट्टि श्रीनिवासराव* 187
36. मुक्तिबोध - श्री श्री - *अन्नपूर्णा. सी.* 193
37. मुक्तिबोध एवं के.शिवा रेड्डी की कविता में प्रगतिवादी चेतना - *जी.वी.रत्नाकर* 199
38. తెలుగువారి మణిదీపం - దాశరథి - *గోవిందారం వెంకటరాజం* 203
39. బహుముఖ ప్రజ్ఞాశాలి - ప్యారక శేషాచార్యులు - *నక్క హరికృష్ణ* 209
40. దిగంబర కవిత్వంలో జ్వాలాముఖి సాహిత్యం - సామాజిక చింతన - *ఎ.యం.తాయారు* 212
41. "ఎందుకో ఆ హృదిన అన్ని ఆలోచనలు" - కాళోజినారాయణరావు - *సుమలత సనాతన* 220
42. ఆధునిక తెలుగు కవులు - కవితా రీతులు - *కె. మీనారాణి* 226
43. అభ్యుదయ విప్లవ కవిత్వం ఒక పరిశీలన - *అరసవిల్లి కృష్ణ* 231
44. తెలుగులో స్త్రీవాద కవిత్వం - ఒక కోణం - *బెల్లంకొండ సంపత్ కుమార్* 239
45. పురోగామి కవిత్వం - వందేమాతర కావ్యం - *రంకిరెడ్డి రామమోహనరావు* 244
46. ఆంధ్రశతక వాఙ్మయము - సుమతీ శతకము - *డి.జీవనశ్రీ* 252
47. మినీ కవిత్వం - వస్తు వైవిధ్యం - *గుమ్మా సాంబశివరావు* 256
48. హైకు కవిత్వం - వస్తు రూప వైవిధ్యం - *నశ్రీ* 262
49. తెలుగు గజల్ - *పత్తిపాక మోహన్* 269
50. పాటగా కవిత - *పేరిశెట్టి వెంకట నీతాదేవి* 276
51. ఒక అపురూప కవి - *వన్నాల సుబ్రహ్మణ్య భట్టు* 280
52. సామ్యవాద పథంలో సోమసుందర్ మరియు ముక్తిబోధ్ - *జె.కె.విశ్వేశ్వరరావు* 287
53. శ్రీశ్రీ, ముక్తిబోధ్ - సృజన దర్శనం - *రామతీర్థ* 292

•••

26

मुक्तिबोध के काव्य में फैंटेसी

- आर.श्रीनिवासराव पात्रो

गजानन माधव मुक्तिबोध आधुनिक काल के ऐसे कवि है जिन्होंने जीवन की व्याख्या में समग्रता को महत्व दिया है। धर्म, इतिहास, कला, विज्ञान, संस्कृति, और दर्शन का पाठक साधन होने के नाते इन्होंने मूल्यगत जागतिक सूत्रों की खोजने का साहस किया है। दूसरी ओर इनमें आधुनिक जीवन के भावबोधों को रूपाकार देनेवाले सैद्धान्तिक विचारधाराओं जैसे मार्क्सवाद, फ्रायड़वाद, अस्तित्ववाद, मानववादी अस्तित्ववाद, शून्यवाद आदि का चिन्तन है।

मुक्तिबोध के काव्य में हमें आधुनिक जीवन मूल्यों की सशक्त अभिव्यक्ति दृष्टिगोचर होती है। उन्होंने आधुनिक समाज में निम्न मध्यवर्ग या मध्यवर्ग के व्यक्ति की विवशता, सर्वहारा या मजदूर व्यक्ति के शोषण और पूंजीवादी सभ्यता में व्यक्ति की बिकाऊ प्रवृत्ति और पूंजीवाद के शोषण आदि ऐसे विषयों को लिया है जो आधुनिक जीवन के यथार्थ से अपना गहरा संबंध रखते हैं। उनके काव्य की मुख्य विशेषता है अनुभव जगत के आभ्यंतर (आंतरिक) और बाह्य पक्षों (बाहरी पक्ष) के द्वद्वं पूर्ण संबंध को व्यक्त करना उनकी कविताओं में जहाँ बाहरी जगत् अंतर्मन में प्रतिबिंम्बित होता है वहाँ वह मन की गुत्थियों को लेकर प्रकट होता है -

''जितना ही तीव्र है द्वंद्व क्रियाओं / का घनटाओं बाहरी दुनिया में / उतनी ही तेजी से भीतरी दुनियां में / चलता है द्वंद्व।''

मुक्तिबोध की रचनाओं में वैयक्तिक विवेक मानववादी दृष्टिकोण, आत्मचेतना व्यक्ति की गरिमा आदि के रूप में आधुनिक भाव बोध स्पष्टता के साथ अभरा है। उन्होंने रूढ़ियों के प्रति अत्यन्त प्रखर विद्रोह किया और वर्तमान यांत्रिक जीवन पद्धति और सभ्यता की विसंगतियों के बीच नवीन जीवन मूल्यों की उपलब्धि के लिए आकुलता प्रकट की। कहा जाता है कि ''कबीर और निराला की परम्परा में मुक्तिबोध ही एक ऐसे कवि है जिनका व्यंग्य समाज को नैतिक न्याय और सामाजिक सत्य के सामने खडा करता है।

मुक्तिबोध की काव्य कला की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उन्होंने मानव जीवन की जटिल संवेदनाओं और उसके अन्तर्द्वन्द्वों की सर्जनात्मक अभिव्यक्ति के

लिए फैंटेसियों का कलात्मक उपयोग किया है। उन्होंने फैंटेसी पर इस प्रकार विचार व्यक्त किया है ..... वह स्वप्न के भीतर एक स्वप्न, विचारधारा के भीतर और एक प्रच्छन्न विचारधारा कथ्य के भीतर एक और कथ्य, मस्तिष्क के भीतर एक और मस्तिष्क, कक्ष के भीतर एक और गुप्त कक्ष है।

मुक्तिबोध की फैंटेसी केवल भ्रम नहीं है उसमें यथार्थ है और विचार है आत्मालोचना भी है चिन्तन भी -

सपनों में चलती है आलोचना
विचारों के चित्रों की अवलि में चिन्तन

मुक्तिबोध की ''लकड़ी का रावण,'' ''ब्रह्मराक्षस'' और ''अंधेरे में'' कविताएं फैंटेसी के कारण अधिक चर्चित रही हैं। कहा जाता है इन तीनों कविताएं सही अर्थों में लंबी कविता का अनिवार्य आवश्यकताओं को पूरा करनेवाली नई कविता की प्रदीर्घ कविताएं कही जा सकती है। मुक्तिबोध ने इसमें फैंटेसी, प्रतीकात्मकता और अन्तर्द्वन्द्वात्मक मनः स्थितियों का कलात्मक अभिव्यंजन किया है।

मुक्तिबोध अत्यंत ही चिंतनशील कवि है। उन्होंने अपने अनुभवों को व्यक्त करने केलिए फैंटसी शैली को अपनाया है। मुक्तिबोध ने स्वयं इस सन्दर्भ में कहा है कि यथार्थ के तत्व परस्पर गुंफित होते हैं। साथ ही पूरा यथार्थ गतिशील होता हैं। अभिव्यक्ति का विषय बनाकर जो यथार्थ प्रस्तुत होता है वह भी गतिशील है और उसके तत्व भी परस्पर गुंफित हैं। यही कारण है कि मैं छोटी कविता नहीं लिख पाता।

मुक्तिबोध की कविता में फैन्टेसी के दो रूप है। पहला, एक कविता में एक ही बड़ी फैन्टेसी का प्रयोग जिसके भीतर कई छोटी छोटी फैन्टेसी रहती है। दूसरा, एक कवि में अनेक फैन्टेसी का एक साथ प्रयोग। मुक्तिबोध की फैन्टेसी एक ओर अपने युग के अन्तर्विरोध की यथार्थ अभिव्यक्ति करती है। दूसरी ओर वे कवि के अन्तर्द्वन्द्व की जटिलता को भी व्यक्त करती है।

मुक्तिबोध की सर्वाधिक चर्चित कविता 'अंधेरे में' एक लम्बी कविता 45 पृष्ठों की है। पूरी कविता में आठ खण्ड है। इन्हें मुक्तिबोध की भी कहा जा सकता है। यह कविता मुक्तिबोध की व्यक्तिगत और सामाजिक सन्दर्भों की त्रासदी की अभिव्यक्ति है।

''अँधेरे में'' समकालीन समाज और मनुष्यता का भयावह यथार्थ अनेक रूपों में व्यक्त हुआ है। इस यथार्थ की अभिव्यक्ति मुक्तिबोध ने फैंटेसी के माध्यम से की है जिसमें पूरी कविता एक स्वप्न कथा के रूप में चलती है। डॉ.नामवर सिंह इस कविता में फैंटेसी के प्रयोग को दूसरी दृष्टि से देखते हैं। उनके अनुसार स्वप्न शैली में कथा कहने के कारण 'अंधेरे में' कविता में काफी मितव्ययता और सघविता आ गई तथा वर्णन के अनावश्यक विस्तार से अपने आप ही निजात मिल गयी है।

'अंधेरे में' कविता मुक्तिबोध की एक ऐसी ही कविता है जिसमें सामाजिक दंशों, द्वेषों के विरूद्ध आत्म सम्मान की मर्यादित भावनाओं का भी बाहुल्य है और इसकी प्राप्ति के लिए विद्रोह और भर्त्सना, क्रांति और प्रार्थना का सचेत आग्रह भी।

यह कविता मुक्तिबोध की व्यक्तिगत और सामाजिक सन्दर्भो की त्रासदी की अभिव्यक्ति है। 'अंधेरे में' समकालीन समाज और मनुष्यता का भयावह यथार्थ अनेक रूपों में व्यक्त हुआ है। इस यथार्थ की अभिव्यक्ति मुक्तिबोध ने फैंटेसी के माध्यम से की है जिसमें पूरी कविता एक स्वप्न कथा के रूप में चलती है। इस कविता का प्रारम्भ भी कवि मुक्तिबोध ने 'फैंटेसीपरक' वातावरण से किया है।

वृक्षों के अंधेरे में छिपी हुई किसी एक / तिलस्मी खोह का शिलादार / खुलता है धड़ से / घूमता है लाल लाल मशाल अजीब-सी / अन्तराल बिवर के तम में / लाल-लाल कुहरा / कुहरे में सामने खतालोक स्नात पुरूष एक रहस्य साक्षात् ।

'अंधेरे में' कविता में दो खतालोक स्नात पुरूष इनमें से एक तो अंधेरे कमरा में चक्कर लगा रहा है। बाहर तालाब की लहरों में अपना चेहरा देखता हुआ भीतर आने के लिए सांकल बजा रहा है। वस्तुतः ये दोनों रक्तालोक स्नात पुरूष क्रमशः सामाजिकता एवं कविता के प्रतीक है। मुक्तिबोध इन प्रतीकों के माध्यम से यह कहना चाहते है कि मनुष्य की पूर्ण संभावनाएं तभी प्रकट होगी जब कविता सामाजिकता को ग्रहण कर ले दूसरे शब्दों में दोनों का अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है।

मुक्तिबोध की इस कविता में जिस अंधेरे का उल्लेख है, वह यह संकेतित करता है कि आज सामाजिकता अव्यवस्था से घिर गई है तथा कवि के मानस में भी अंधेरा भर गया है, उसका व्यक्तित्व भी अन्धकार ग्रस्त है। उसे आत्मान्वेष करते हुए उपलब्ध जीवन सत्यों से आत्म विस्तार करना होगा तभी यह अंधेरा दूर होगा। उसे 'मैं' से हम की ओर जाना होगा, अपनी अस्मिता एवं इयत्ता को समाज समर्पित करना होगा। तभी आत्मशुद्धि होगा और तभी प्रकाश होगा। निश्चय ही यह कविता मुक्तिबोध के आत्म परिष्कार एवं आत्म विस्तार को द्योंचित करने वाली फैंटेसी है। यहाँ श्क्तालोक स्नात पुरूष को मानव संस्कृति के विकास हेतु संघर्षरत 'संस्कृति पुरूष' कवि का प्रतीक माना जा सकता है जो मध्यवर्ग की आदर्शवादिता को दृढ़ता से धारण किए हुए है और जिसकी प्रवृत्ति समझौतावादी नहीं है।

'प्रभाकर श्रोत्रीय' के अनुसार 'अंधेरे में' कविता क्लासिकी और सामाजिक दृष्टि से आज भी चुनौतीपूर्ण रचना है। इस संदर्भ में अंधेरे में एक कालजयी और असमाप्त कविता है जिसमें कला और कविता के पुनर्सृजन की सम्भावनाएं छिपी हुई है।

मुक्तिबोध जटिल रचना प्रक्रिया के कवि। उनकी इस 'अंधेरे में' कविता में अर्थ के सूक्ष्म और जटिल स्तर मिलते हैं जो मुक्तिबोध के व्यक्तित्व और अनुभवों की देन है।

श्रीकांत वर्मा के अनुसार - 'अंधेरे में' मुक्तिबोध की प्रतिनिधि कविता है जो अपने युग की घटनाओं से नहीं बल्कि उसकी बनावट से सामना करती पहले भी यह कहा जा चुका है कि मुक्तिबोध की इस लम्बी कविता को टुकडे टुकडे में नहीं देखा जा सकता। इस कविता में कवि मुक्तिबोध के अनुभव, संवेदना, इन्द्रियबोध और उनके विचार सबकी संहिति इस प्रकार है कि अपनी समग्रता विकास और संवेदना के अन्तर्द्वन्द्व में ही उसे समझा जा सकता है।

इस प्रकार 'अंधेरे' में कविता मुक्तिबोध के जीवन - दर्शन, रचना - प्रक्रिया और अभिव्यत्ति के संघर्ष को समझने के लिए ही नहीं बल्कि समकालीन समय और समाज पर छाए संकट कर अनुभव करने की सीमा तक प्रासंगिक है। अपने गहरे और अकटाय राजनैतिक और मानव अर्थो में 'अंधेरे में' हिन्दी की उन थोडी सी आधुनिक कविताओं में से एक है जो मनुष्य की उलझनों, विकृतियों और आकांक्षाओं को एक ऐसी अन्तर्कथा कहती है जिसके आशय समय के साथ बदलने और नई प्रासंगिकता प्राप्त करने चलते है।

ब्रह्मराक्षस कविता मुक्तिबोध की अत्यंत सशक्त रचना है। 'ब्रह्मराक्षस' एक मध्यवर्गीय बुद्दिजीवी है। वह यह मद्यवर्ग बुद्धिजीवी का प्रतीक है। वह अपने वर्ग के जीवन मूल्यों के प्रति जागरूक नहीं रहता है। वह अपने ज्ञान का समाज कल्याण के लिए उपयोग नहीं करता। वह अपने ज्ञानकूल से नहीं निकल पाता। परिणामस्वरूप वह अपनी आत्ममुक्ति के लिए छटपटा रहा है। वह इन्हीं वर्गीय संस्कारों की पाप छाया को स्वच्छ करने के लिए बावड़ी में दिन - रात स्नान करता रहता है और देह घिसता रहता है किन्तु उसका मैल कम होने की बजाय बढ़ता ही जाता है।

गहन अनुमानिता / तन की मलिनता / दूर करने के लिए प्रतिफल / पाप छाया दूर करने के लिए, दिन रात / स्वच्छ करने / ब्रह्मराक्षस / घिस रहा है देह / हाथ के पंजे बराबर / बांह छाती मुंह छपाछप / कहो साफ

मुक्तिबोध के ब्रह्मराक्षस का संकेत यह है कि 'व्यक्ति' प्राप्त ज्ञान को व्यावहारिक नहीं बना पाता, उसे क्रिया (एक्शन) में परिणत नहीं कर पाता परिणामतः भटकता रहता है कि और फ्रस्ट्रेशन (कुण्ठा, निराशा इत्यादि) का शिकार हो जाता है। यहाँ कवि यह कहना चारता है कि संचित अनुभव और ज्ञान तभी सार्थक होता है जब वह निरंतर विकसित एवं प्रवर्द्धित होता रहे और भावी ज्ञान की आधारशिला बने। यदि ऐसा नहीं होगा तो अतीत का ज्ञानात्मक संवेदन और अनुभव व्यर्थ प्रमाणित हो जाएगा।

वस्तुतः ब्रह्मराक्षस की ट्रेजेडी आज के बुद्धिजीवी की ट्रेजेडी है। वह ज्ञानोपार्जन करके भी मनोवांछित परिवर्तन नही कर पाता। इस प्रक्रिया में वह जो

प्रयत्न करता है, वे असफल हो जाते हैं परिणामतः वह निराशा एवं कुण्ठा से भर जाता है। उसकी मूल विडम्बना यह है कि वह उपलब्ध ज्ञान को क्रिया में नहीं बदल पाता परिणामतः अन्तः बाह्य संघर्ष में जूझता रहता है।

मुक्तिबोध की धारणा थी कि अतीत से पूरी तरह टूटकर कोई भी वर्तमान सार्थक भविष्य का रूप नहीं ले सकता। इस ब्रह्मराक्षस कविता में वे उसी विचारधारा को प्रतीकों के माध्यम से व्यक्त करना चाहते हैं। ब्रह्मराक्षस अतीत की बौद्धिक चेतना है जो बावड़ी रूपी वर्तमान समूह मन में रहता है और अपनी आत्मा के अन्वेषण में रत है। कवि अपनी 'फैंटेसियों' में प्रतीकों का माध्यम ग्रहण करते हैं। वे सामान्य भाषा में नही अपितु प्रतीकों और बिम्बों की भाषा में बोलते हैं।

मुक्तिबोध की कुछ अन्य कविताएं यथा - दिमागी गुहान्धकार का ओरांग, उटांग, चांद का मुँह टेढ़ा है, लकडों का रावण भी फेंटेसीपरक कविताएँ हैं। 'ओरांग उटांग' से कवि का अभिप्राय मन की भीतरी परतों में दबे अवचेतन से है। यथा

कोठे के सांवले गुहान्धकार में
मजबूत सन्दूक
दृढ भारी - भरकम
और उस सन्दूक के भीतर कोई बन्द है .....

■

डॉ. आर. श्रीनिवास राव पात्रो, सहायक आचार्य (हिंदी) शासकीय महाविद्यालय, नरसन्नपेट, श्रीकाकुलम जिल्ला। (आं.प्र.)

27

मुक्तिबोध की काव्यभाषा में यथार्थ - आक्रोश

- नयना डेलीवाला

काव्य भाषा विश्व साहित्य में हमेशा से ही महत्वपूर्ण रही है। युनानी विचारकों ने भी कवि कर्म में भाषा को ही प्रधानता दी है और भारतीय काव्यशास्त्र में भाषा को साहित्य में बहुत महत्व दिया है। काव्य भाषा सामान्यतः पृथक नहीं अपितु उसका विशिष्ट रूप होती है क्योंकि सामान्य भाषा में भावों की अभिव्यक्ति उतनी सहज और सरल नहीं होती, साथ ही सामान्य भाषा शिक्षित और बुद्धिजीवी वर्ग के स्तर से भिन्न होती है।

विश्व साहित्य की ये स्थिति है कि रचनाकार को एक साथ काव्य चिन्तक एवं आलोचक भी बनना पड़ता है। कई सालों से यह स्थिति हिंदी साहित्य में भी प्रवर्तमान है। मुक्तिबोध भी इससे बच नहीं पाये। उन्होंने कहा है ..... ''मैं, मुख्यतः विचारक न होकर केवल कवि हूँ। किंतु आजका युग ऐसा है कि विभिन्न विषयों पर उन्हें भी मनोमंथन करना पड़ता है।'' अनेक कवियों की भांति मुक्तिबोध का भी स्वानुभूत सत्य है।

मुक्तिबोध ने एक स्थान पर लिखा है, ''कवि भाषा का निर्माण करता है। जो कवि भाषा का निर्माण करता है, विकास करता है, वह निस्संदेह महान होता है।''[1] भाषा एक जीवित परम्परा है जो निरन्तर चलती रहती है। भाषा एक सामाजिक निधि है जो साहित्य में रचनाकार की अनुभूति के रूप में उतर साहित्य जगत को रौशन करती है। मुक्तिबोध के अनुसार, ''कलाकार को शब्द साधना द्वारा नये-नये भाव और नये अर्थ स्वप्न मिलते हैं।[2]

'अंधेरे में' कविता को मुक्तिबोध की कविताओं का सार - योग और कवि-कर्म की चरम परिणति स्वीकार किया जाता है। यह मध्यवर्गीयों की दृष्टि साफ करती है, क्योंकि यह आधुनिक जन-जीवन की और विशेष रूप से भारतीय जन-जीवन की त्रासदी का ऐसा दस्तावेज समझी जा रही है, जो 'नये - नये संदर्भों में निरंतर पुनर्जीवित होते रहने की अचूक क्षमता से युक्त है।' इस कविता में बलिदान, भय और क्रान्ति की अवधारणाएं निहित है। इसकी पृष्ठभूमि के रूप में मुक्तिबोध ने